بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-18.03.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का शुभ वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 18 मार्च 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के जीवन परिचय के वर्णन में ज़कात न देने वालों के बारे में तबरी के इतिहास में बयान हुआ है कि नबुव्वत का झूठा दावा करने वाले तुलैहा बिन ख़ुवैलिद के हाथ पर एकत्र होने वाले असद, ग़तफ़ान तथा तै नामक क़बीले जबकि फ़ज़ारा, सअलबा बिन सअद, मर्रा, अबस, बनू कनाना, जुलक़िस्सा, लैस, दैल तथा मदलज नामक क़बीलों के प्रतिनिधि मंडल मदीना आए तथा हज़रत अब्बास के अतिरिक्त मदीना के अन्य प्रमुखों के हाँ पधारे, फिर वे उनका एक संयुक्त प्रतिनिध मंडल बनाकर हज़रत अबू बकर रज़ी की सेवा में इस शर्त के साथ ले गए कि वे नमाज़ पढ़ते रहेंगे परन्तु ज़कात न देंगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि यदि ये ऊँट बांधने की रस्सी भी रोक लेंगे तो मैं इनके साथ युद्ध करूँगा। इस प्रतिनिधि मंडल ने जब आप रज़ी. का संकल्प देखा तो मदीना वापस हो गया।

एक सीरत के लिखने वाले लिखते हैं कि मदीना से जाते समय दो बातें इन प्रतिनिधियों के मस्तिष्क में थीं। नम्बर एक यह कि ज़कात के इंकार के विषय में ख़लीफ़ः के अपने विचार तथा संकल्प से हटने की कोई आशा नहीं, नम्बर दो यह कि उनम यह अहंकार था कि मुसलमानों मं दुर्बलता तथा संख्या की कमी को सुअवसर जानते हुए मदीने पर ऐसा घोर हमला किया जाए जिससे इस्लामी शासन ध्वस्त हो जाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. भी निश्चिंत नहीं थे, उन्होंने मदीने के सभी नाकों पर नियमानुसार पहरे बिठा दिए थे। केवल

तीन रातें बीती थीं कि ज़कात के मुंकिरों ने रात होते ही मदीने पर हमला कर दिया परन्तु मुसलमानों ने दुश्मन को पीछे हटने पर विवश कर दिया। मदीने से चालीस मील की दूरी पर जुल्क़स्सा नामक स्थान पर मौजूद आक्रमण कारियों के साथी उनकी सहायता के लिए आए। इसी बीच हज़रत अबू बकर रज़ी. भी अपनी सेना की तय्यारी में व्यस्त रहे। रात के पिछले पहर घमासान युद्ध हुआ तथा सवेरा होने से पहले ही इंकारियों ने पराजित होकर भागना उचित समझा। यह पहली विजय थी जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दी। एक लेखक इस लड़ाई को बदर के युद्ध की संज्ञा देते हुए लिखते हैं कि इस अवसर पर अबू बकर रज़ी. ने ईमान व यक़ीन तथा दृढ़ संकल्प होना जो व्यक्त किया, उससे मुसलमानों के दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलहि वसल्लम के दौर की लड़ाईयों की याद ताज़ा हो गइ। जिस तरह बदर के युद्ध में दूरगामी परिणाम नीहित थे इसी तरह इस युद्ध में भी मुसलमानों की विजय ने इस्लाम के भविष्य पर गहरा प्रभाव डाला।

बनू ज़बयान, बनू अबस तथा अन्य क़बीलों ने इस पराजय के कारण अत्यंत क्रोध में आकर अपने यहाँ मौजूद मुसलमानों पर अचानक हमला करके उनको बड़ी निर्दयता से भांति भांति को यातनाएँ देकर शहीद कर डाला। इन अत्याचारों की सूचना मिलने पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने क़सम खाई कि हर क़बीले में से मुसलमानों के हत्यारां का वध करेंगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. के नेतृत्व में ज़कात के मुंकिरों के हमलों की रोक थाम होत ही अन्य गडबडो फलान वाल क़बीले एक के बाद एक अपनी ज़कात लेकर मदीने की ओर आने लगे। तबरी के इतिहास में है कि उस ज़माने मं इतनी अधिक धन राशि मदीने में आई कि जो मुसलमानों की आवश्यकता पूरी होने के बाद बच गइ।

फिर एक लेखक पराजित क़बीलों के व्यवहार के बारे में लिखता है कि अबस, ज़ीबान, ग़तफ़ान, बनी बकर तथा मदीने के निकट बसने वाले अन्य विद्रोही क़बीलों के लिए उचित था कि वे अपनी हठ-धर्मी तथा विद्रोह छोड़ देते, हज़रत अबू बकर रज़ी. के सम्पूर्ण आज्ञा पालन एवं इस्लाम के नियमों के पालन को स्वीकार करते, परन्तु मुसलमानों की दुश्मनी ने उनकी आँखें अंधी कर दी थीं, उन्होंने अपनी बस्तियों को छोड़ दिया तथा क़बीला बनी असद के नबुव्वत के झूठे दावेदार तुलेहा बिन ख़ुवेलिद से जा मिले। इन लोगों के पहुंच जाने से 'तुलेहा' तथा 'मुसैलमा' को शक्ति एवं समर्थन में वृद्धि हो गई तथा यमन में बग़ावत की आग ज़ोर शोर से भड़कने लगी। यह सदैव याद रहना चाहिए कि इन लोगों ने विद्रोह किया था तथा युद्ध किया था, केवल किसी दावे पर अथवा किसी का दावा करने पर यह युद्ध नहीं हुआ था, बग़ावत का तथा जो लड़ाई हुई थी उसका बदला लिया जा रहा था।

ज़कात के इंकारियां पर विजय पाने और हज़रत अबू बकर रज़ी. की दलेरी तथा संकल्प का वर्णन करते हुए अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलहि वसल्लम के निधन के पश्चात हम उस स्तर पर थे कि यदि अल्लाह अबू बकर सिद्दीक़ के माध्यम से हमारी सहायता न करता तो विनाश निश्चित था। हम सब मुसलमानों का परो सहमति क साथ यह विचार था कि हम ज़कात के ऊँटों के लिए दूसरों से युद्ध नहीं करेंगे और अल्लाह की इबादत में व्यस्त हो जाएँगे यहाँ तक कि हमें सम्पूर्ण ग़ल्बः मिल जाए, परन्तु अबू बकर सिद्दीक़ ने ज़कात रोकने वालों के साथ लड़ने का निश्चय कर लिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने तक़वा के स्तर बयान करते हुए फ़रमाया कि अहमदियों को याद रखना चाहिए कि ज़कात कितनी अनिवाय है तथा इसकी नियमित व्यवस्था करनी चाहिए, ख़ुदा तआला ने नमाज़ों

के बाद इसका आदेश दिया है। ख़िलाफ़त की उपाधि के विषय में एक स्थान पर आप रज़ी. ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. पर जब ज़कात के बारे में आपत्ति हुई कि यह आदेश तो नबी करीम सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम को हुआ था, जिसे वसूल करने का आदश हुआ था उसका निधन हो चुका, इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जवाब दिया कि आँहज़रत सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम का देहान्त हो गया परन्तु शरीअत तो स्थापित है और अब ख़लीफ़ः को आदेश है, अतः उसी क साथ एकमत होकर मैं कहता हूँ कि आज यह आदेश मेरे लिए है तथा यही नियम सदैव ख़िलाफ़त के साथ रहेगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने एक अवसर पर यह भी फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम के निधन के बाद इतिहास में आता है कि केवल तीन स्थान ऐसे रह गए थे जहाँ मस्जिदों में जमाअत के साथ नमाज़ होती थी। देश के अधिकांश लोगों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया था तथा वे कहते थे कि रसूल करीम सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम के बाद किसी का क्या अधिकार है कि वह हमसे ज़कात मांगे। ज़कात के मामले में मतभेद के कारण अरब के हज़ारां लोग इस्लाम से विमुख हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. को सूचना मिली कि मुसैलमा एक लाख की सेना लेकर हमला करने वाला है। उस समय कुछ सहाबियों ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को सुझाव दिया कि इन परिस्थितियों में आप ज़कात की मांग न करें तथा इन लोगों से सन्धि कर लें, किन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि जब तक मैं इन लोगों को ज़कात देने के लिए सहमत न कर लूँगा, इनसे कभी सन्धि न करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- अतः वास्तविक ईमान की यही निशानी हुआ करती है और यही ईमान यदि हम में होगा तो हम दुनिया में इस्लाम का वास्तविक सन्देश पहुंचा सकेंगे तथा इन्शाअल्लाह सफल होंगे। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि मूल सत्य यही है कि जिस प्रकार नमाज़ रोज़े के विषय में निर्देश रसूल्ल्लाह सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम तक समाप्त नहीं हो गए उसी प्रकार राष्ट्रीय तथा क़ौम के निज़ाम से सम्बंध रखने वाले आदेश भी आप स. के निधन के साथ समाप्त नहीं हो गए और जमाअत के साथ नमाज़ की तरह इन आदेशों के बारे में भी अनिवार्य है कि सदैव मुसलमानों में आप स. के नायबों द्वारा इनके अनुसार व्यवस्था चलती रहे।

फिर एक अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने यह भी फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के ज़माने में सहसा पूरा अरब इस्लाम से विमुख हो गया, केवल मक्का, मदीना तथा एक छोटा सा कस्बा रह गए। शेष समस्त स्थानों के लोगों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया तथा वे सेना लेकर मुक़ाबले के लिए निकल खड़े हुए। कई स्थानों पर उनके पास एक एक लाख की भी सेना थी परन्तु इधर केवल दस हज़ार की सेना थी जिसे अपन निधन के समय रसूल करीम सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ी. के नेतृत्व में रोमी क्षेत्र में हमला करने के लिए तय्यार किया था। शेष लोग जो रह गए थे वे दुर्बल, बूढ़े तथा गिनती के कुछ युवा थे। ये स्थिति देख कर प्रतिष्ठावान सहाबियों के एक प्रतिनिधि मंडल ने हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में निवेदन किया कि बग़ावत समाप्त होने तक इस सेना को रोक लिया जाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अत्यंत क्रोध की हालत में फ़रमाया कि क्या तुम यह चाहते हो कि रसूल करीम सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम के देहान्त के बाद अबू क़हाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम यह करे कि जिस सेना को रवाना करने का रसूल करीम सल्लल्लाह् अलहि वसल्लम ने आदेश दिया था, उसे रोक ले। आप रज़ी. ने कहा कि मैं इस सेना को अवश्य रवाना करूँगा, यदि तुम दुश्मन की सेनाओं से डरते हो तो निश्चय ही मेरा

साथ छोड़ दो, मैं अकेला सारे दुश्मनों का मुक़ाबला करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि यह يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا की सच्चाई का बड़ा प्रमाण है, अर्थात वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे, अर्थात ख़िलाफ़त पर क़ायम होने वाले अथवा ख़िलाफ़त के साथ रहने वाले, और यह वह हालत है जो ख़िलाफ़त के निज़ाम के साथ जारी है और रहेगी।

हज़रत मुस्लेह माऊद रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के निर्णय पर महान परिणाम पैदा होने के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने सहाबियों की इच्छा के विरुद्ध हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. की सेना को रवाना कर दिया जो चालीस दिन बाद विजयी पताका फहराती हुआ मदीना वापस आई और ख़ुदा की सहायता एवं विजय को अवतरित होते सबने अपनी आँखों से देख लिया, इसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. ने झूठे नबुव्वत के दावेदारों को कुचल कर रख दिया तथा यह उपद्रव पूर्णतः मलयामेट हो गया। तत्पश्चात यही हाल इस्लाम से विमुख लोगों का हुआ। फिर इस गतिविधि का विरोध करने वाले सहाबियों को, जो कहते थे कि तौहीद और रिसालत को स्वीकार करने वाले ज़कात के इंकारियों पर किस तरह से तलवार उठाई जा सकती है, हज़रत अबू बकर रज़ी. ने बड़े साहस से काम लेते हुए फ़रमाया कि यदि आज ज़कात न देने की अनुमति दे दी तो धीरे धीरे लोग नमाज़ रोज़े को भी छोड़ बैठेंगे तथा इस्लाम केवल नाम मात्र का रह जाएगा। अतएव ऐसी अवस्था में हज़रत अबू बकर रज़ी. ने ज़कात रोकने वालों का मुक़ाबला किया तथा परिणाम यही था कि इस मैदान में भी आप रज़ी. को सफलता एवं सहायता मिली तथा समस्त बिगड़े हुए लोग सत्य मार्ग की ओर लौट आए।

हज़ूर-ए-अनवर न फरमाया कि अभो यह श्रंखला चल रहो ह, इन्शाअल्लाह आग वणन करूंगा।

हज़ूर-ए-अनवर न इसक बाद एक दआ को प्ररणा दत हए फरमाया कि आजकल दनिया क हालात क लिए दआ करत रह, उनम कमो न कर, विशष रूप स यह दआ कर कि दनिया अपन पदा करन वाल का पहचानन लग जाए, यहो एक समाधान ह विश्व का विनाश स बचान का, अल्लाह तआला रहम फरमाए आर हमारो दआए भो कबल फरमाए।

हज़ूर-ए-अनवर न अन्त म मकरम व महतरम मालाना मबारक नज़ोर साहब पव प्रधान अध्यापक जामिअः अहमदियः तथा मबल्लिग इचाज कनडा क निधन पर उनका सदवणन करत हए उनको जमाअतो सवाआ का भो विस्तार पवक वणन किया तथा जम्अः को नमाज़ क बाद उनक जनाज़ को नमाज़ गायब पढान का भो एलान फरमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131